मुगल काल में शिक्षाः एक सर्वेक्षण

(1) रविंद्र , (2) डॉ सुमेस्ता श्योराण
(1) शोधार्थी , ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय , हिसार
(2)प्रोफेसर , ओम स्टर्लिंग ग्लोबल विश्वविद्यालय , हिसार
ravi.nain04@gmail.com

मुख्य शब्द – शिक्षा , मुगल , मदरसा , मुसलमान , पुस्तकालय ,हिन्दू ,संस्कृति

प्रस्तावनाः

अकबर ने धार्मिक सहिष्णुता एवं राजनीतिक उदारता के साथ एक कुशल प्रशासन एवं सांस्कृतिक उत्थान के साथ शक्तिशाली मुगल साम्राज्य की स्थापना की।तुलनात्मक दृष्टि से देखे तो मुगल काल विभिन्न स्थापत्य कला, संगीत एवं चित्रकला के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी सल्तनत काल से आगे था । मुगलकालीन शासक शिक्षा के क्षेत्र में रुचिकर कार्य करते थे । उन्होंने शिक्षा के विस्तार के लिए अनेक कार्य भी किया। उन्होंने विद्वानों को न सिर्फ अपने दरबार में सम्मानित स्थान दिया बल्कि उन्हें समय –समय पर आर्थिक सहायता भी प्रदान की। शिक्षा के मुगलकालीन उद्देश्य के बारे में डॉक्टर ए एल श्रीवास्तव ने कहा है कि "मुगल सम्राट शिक्षा पर जो कुछ व्यय करते थे । वह धार्मिक यश प्राप्त करने के लिए करते थे । जनता की भलाई के लिए शिक्षा का प्रसार करना उनका उद्देश्य नहीं था।" 1 मुगलकालीन शिक्षा के निम्न उद्देश्य थे

- प्रत्येक मुसलमान को शिक्षा प्रदान करना
- इस्लाम का प्रचार एवं प्रसार करना
- भारतीय सभ्यता एंव संस्कृति को जानने के लिए
- भौतिक सुख प्राप्त करना
- राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करना

इस्लामी शिक्षा का मूल स्थान भारत ही नहीं बल्कि मध्य एशिया ,अरब और इरान भी थे । यहां काफी पहले से ही मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का विकास हो चुका था । इन देशों के विद्यालय इस्लामी शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे । इनका मुख्य उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना तथा इसे शुद्ध बनाना था । डॉक्टर युसूफ हुसैन का कथन उल्लेखनीय है कि "मध्य युग में शिक्षा का दृष्टिकोण भी मजहबी था । राजनीतिक दर्शन और शिक्षा मजहबी नियंत्रण में थे । यहां तक की लोगों की सोचने और अभिव्यक्ति तक के दृष्टिकोण मजहबी थे।"2 इस्लामी देशों के समान भारत में भी मुगल काल में शिक्षा का मूल उद्देश्य धार्मिक भावना से अवगत कराना था । मुगल साम्राज्य की प्रजा अपने बच्चों की आयु और परिस्थिति के अनुसार उनकी शिक्षा का प्रबंध करती थी।

प्रारंभिक शिक्षाः

मुगल काल में प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र विद्यालय थे । विद्यालयों को मकतब कहा जाता था । इन मकतबों में वर्णमाला एवं धार्मिक विचारों तथा प्रार्थना का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाता था । जनसाधारण के बच्चे इन्हीं मकतबों में शिक्षा प्राप्त करते थे । जबकि उच्च वर्ग एवं राज परिवार के बच्चों के लिए अलग से अध्यापकों की नियुक्ति शिक्षा के लिए की जाती थी । मकतबो के अतिरिक्त खानकाह और दरगाहों में शिक्षा दी जाती थी । प्रारंभिक शिक्षा बिस्मिल्लाह की रस्म से सामान्यतः 5 वर्ष की उम्र से प्रारंभ कर दी जाती थी ।

उच्च शिक्षाः

मुगल काल में उच्च शिक्षा प्रमुख रूप से मदरसे में दी जाती थी । इन मदरसे में व्याख्यानों के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी । मदरसे में अध्यापकों की नियुक्ति सरकार के द्वारा की जाती थी । मदरसे में प्रवेश

उन विद्यार्थियों को दिया जाता था । जिन्होंने मातृभाषा में शिक्षा पूर्ण कर ली हो इन मदरसे का संचालन एक समिति द्वारा किया जाता था । जिसमें राज्य के प्रमुख व्यक्ति होते थे द्य मुगल काल में शिक्षा दो प्रकार स दी जाती थी –

धर्मनिरपेक्ष शिक्षाः

धर्मनिरपेक्ष शिक्षा के अंतर्गत अरबी, व्याकरण, साहित्य, तर्कशास्त्र , दर्शनशास्त्र इतिहास, गणित, ज्योतिष, भूगोल, कानून, चिकित्सा शास्त्र एवं कृषि आदि होता था । इस शिक्षा का माध्यम अरबी भाषा था।

धार्मिक शिक्षाः

धार्मिक शिक्षा के अंतर्गत धर्म एवं धार्मिक विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती थी । इस प्रकार की शिक्षा प्रदान किए जाने का मुख्य उद्देश्य नए–नए धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बने लोगों को धर्म से अवगत कराना था।3 इस कारण इस प्रकार की शिक्षा को मदरसे के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था । अकबर ने इस व्यवस्था में परिवर्तन किया तथा हिंदू और मुसलमान को समान रूप से शिक्षा प्रदान किए जाने की व्यवस्था की ।

यह प्रबंध संतोषजनक थे द्यमुगलकालीन शासको ने शिक्षा के विकास के लिए जो प्रयास किया उनका विशद अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है ।

बाबर के समय में शिक्षाः

भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर कुशल योद्धा ही नहीं अपितु साहित्य एवं कला प्रेमी शासक भी था। भारत में मुगल सत्ता को स्थायित्व की जद्दो–जहद के बावजूद वह साम्राज्य की सामाजिक संरचना का भी निर्माण कर रहा था ।दिल्ली में उसने एक मदरसा स्थापित कराया ,जिसमें कुरान व हदीस के अतिरिक्त गणित भूगोल एवं ज्योतिष भी पढाया जाता था । इसके समय में 'शुहरते–आम' एक विभाग होता था , जो स्कूल एंव कॉलेज की व्यवस्था करता था।4 अकबर की तुर्की भाषा पर अद्भुत पकड थी। तुर्की भाषा में उसकी आत्मकथा तुजके बाबरी इसका उत्तम उदाहरण है। बाबर के समय से ही शिक्षा के प्रमुख संस्थान मस्जिद, मकतबे एवं मदरसे सार्वजनिक रूप से शिक्षा के केंद्र थे।

हुमायूं के समय में शिक्षाः

हुमायूं का शिक्षा के प्रति प्रेम अपने पिता से विरासत में प्राप्त हुआ था। वह उच्च कोटि का विद्वान था। उसे अध्ययन एवं अनुसंधान करने में रुचि थी। आईने अकबरी एवं अकबरनामा के लेखक अबुल फजल लिखते हैं कि पुस्तकें हुमायूं की आध्यात्मिक साथी थी। उसे भूगोल व ज्योतिष से विशेष लगाव था। शिक्षा का प्रोत्साहन देने के लिए वह बृहस्पतिवार और शनिवार को विद्वानों से संपर्क करता था। उसने दिल्ली और आगरा में एक–एक मदरसा बनवाया था। पुस्तकों से उसे इस हद तक लगाव था कि वह युद्ध अभियानों के समय भी अपने साथ पुस्तकालय ले जाया करता था। हुमायूं के पास विभिन्न विषयों की बहुमूल्य पुस्तकों को पराने किले के शेर–ए– मंडल में संग्रहित किए हुए था। जिसका कालांतर में नाम बदलकर दीन–ए–पनाह पुस्तकालय रख दिया गया था। परंतु उसमें अपने पिता के समान उच्च कोटि की परिष्कृत रुचि का अभाव था।

अकबर कालीन शिक्षा :

अकबर स्वयं शिक्षित नहीं था फिर भी उसने शिक्षा के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया । उसे पुस्तकों को पढवा कर सुनने में रुचि थी। अपने शासनकाल के बाद के वर्षों में उसने मुस्लिम शिक्षण संस्थानों में प्रचलित रूढ़िवादिता को दूर करने का प्रयास किया । मकतब व मदरसे में दी जाने वाली धार्मिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सुधार के आदेश दिए । साम्राज्य में दी जाने वाली शिक्षा के संबंध में अकबर के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए अबुल फजल द्वारा लिखित आईने अकबरी में लिखा है कि "प्रत्येक लडके को नैतिकता, गणित और गणित से संबंधित धारणाओं, कृषि ,ज्यामिति ,ज्योतिष, शरीर विज्ञान ,गृह विज्ञान और इतिहास की पुस्तकों को पढना चाहिए और सभी विषयों का धीरे–धीरे ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।"5

अकबर ने जिस मुगल साम्राज्य की स्थापना की वह उदारता , सहिष्णुता, सौहार्दपूर्ण विचारधारा पर आधारित थी। अकबर का सामाजिक दृष्टिकोण एक व्यापक सामाजिक व्यवस्था की शुरुआत करता है। अकबर के इस दृष्टिकोण से भारत में इंडो–इस्लामी संस्कृति के विकास को बडा बल मिला। 17वीं सदी के

अंत तक मुगल साम्राज्य के अंतर्गत समस्त भारतीय प्रायद्वीप का राजनीतिक एकीकरण हो जाने और मुगल बादशाहों के द्वारा सांस्कृतिक संरक्षण दिए जाने से भी यह प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती रही। उपरोक्त दोनों बातों के परिणाम स्वरुप एक मिली मिले–जुले शासक वर्ग का उदय हुआ ।जिसने पुनः सांस्कृतिक विरासत को सुदृढ किया। 18 वीं सदी में मुगल साम्राज्य के पतनोमुख हो जाने पर भी इस संस्कृति का विकास नहीं रुका। इसक विपरीत लखनऊ , मुर्शिदाबाद , पुणे और हैदराबाद और बाद में मैसूर जैसे नवोदित राज्यों के अभिजातीय वर्गों के संरक्षण में यह संस्कृति और ज्यादा विकसित हुई।

अकबर ने राज परिवार के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था की । साथ ही प्रजा की शिक्षा को भी उच्च स्थान दिया। उसने शिक्षा के माध्यम से हिंदू और मुस्लिम दो परस्पर विरोधी संप्रदायों को निकट लाने का प्रयास किया। अकबर ने आदेश जारी किया कि संस्कृत विद्यालयों में गैर हिंदू को भी व्याकरण ,न्याय एवं पतंजलि के भाष्य पढाएं जाएं । संभवतः इसका उद्देश्य यह था कि जो मुस्लिम छात्र संस्कृत का अध्ययन करें , वह इन विषयों का भी अध्ययन कर जानकारी प्राप्त करें । आईने अकबरी में उल्लेख है कि अकबर ने अपने आधुनिक युग में सभी विषयों को पढाए जाने पर बल दियाद्य उसने शिक्षा प्रणाली को सुगम करने के लिए कई सकारात्मक सुधार किए और शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास किया। अकबर ने आर्थिक सहायता देकर मकतबों व मदरसों की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार किया । उसकी राजाज्ञा से मुस्लिम मकतब और मदरसों में गैर मुसलमानों को प्रवेश की आज्ञा दी गई और वे फारसी का अध्ययन करने लगे । अकबर ने शिक्षा में भी सहिष्णुता की नीति अपनाते हुए धर्मनिरपेक्षता को स्थान दिया और अनेक हिंदू फारसी के अध्यापक नियुक्त किए गए।

अकबरनामा के अनुसार अकबर ने फतेहपुर सीकरी और आगरा में एक विशाल सुंदर मदरसा स्थापित करायाद्य अकबर की धाय मां माहम अनगा ने दिल्ली में खैर– उल – मजलिस नामक प्रसिद्ध मदरसा बनवाया ।अकबर ने व्यावसायिक शिक्षा के प्रशिक्षण के लिए भी स्कूल खुलवाए और वहां योग्य शिक्षकों को नियुक्त किया। ताकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर कुशल बन सके। 6

जहांगीर कालीन शिक्षा :

जहांगीर अपने पिता के समान कलात्मक शासक था। उसने अपने शासनकाल में शिक्षा के विकास के लिए यह आदेश जारी किया कि यदि कोई व्यक्ति निरूसंतान मर जाए तब उसकी सारी संपत्ति शैक्षिक संस्थान (मदरसा)को दे दी जाए। इस प्रकार से प्राप्त होने वाली संपत्ति से उसने मदरसा का जीर्णोद्धार करवाया ।जहांगीर ने अपने शासनकाल में ऐसे अनेक मदरसों का जीर्णोद्धार करवाया जो खस्ता हालत में थे या जिनमें वर्षों से जीव जंतु निवास कर रहे थे। उसने उन्हें छात्रों व अध्यापकों को भेंट कर दिया। अतः स्पष्ट है कि जहांगीर ने शिक्षा के विकास में अहम योगदान दिया ।

शाहजहां के काल में शिक्षाः

शाहजहां के काल में शिक्षा के संबंध में इतिहासकारों में वैचारिक मतभेद है कुछ इतिहासकारों का मानना है कि उसके काल में शिक्षा में पर्याप्त उन्नति हुई। परंतु बर्नियर तथा अन्य इतिहासकारों का मानना है की शिक्षा में अत्यंत खर्च होने के कारण उसका विस्तार सीमित हो गया था । परंतु उपरोक्त वर्णन के अनुसार शाहजहां के काल में भले ही नवीन मदरसो की स्थापना ना हुई हो परंतु पूर्व कल से चल रहे मदरसों पर कोई अंकुश नहीं था। स्टीफन ने तो यह भी उल्लेख किया है कि "शाहजहां ने दिल्ली में जामा मस्जिद के नजदीक एक मदरसे का निर्माण भी कराया था।" शाहजहां का पुत्र दारा शिकोह भी एक उच्च कोटि का विद्वान था ।उसने शिक्षा की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए थे।

औरंगजेब कालीन शिक्षाः

औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। अपनी धार्मिक कट्टरता के कारण वह हिंदुओं को प्रबल विरोधी मानता था। गद्दीशीन होने के पश्चात उसने हिंदुओं पर अनेक प्रकार के अत्याचार किए और उनकी कला के पतन का कार्य किया। इस क्रम में उसने अनेक हिंदू मंदिर, पाठशालाएं नष्ट करवा दी । वह केवल मुसलमान की धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था का ही इच्छुक था। अतः प्रांतीय गवर्नरों को उसने इस संबंध में स्पष्ट आदेश जारी कर दिए थे। परंतु कीन महोदय ने लिखा है की "औरंगजेब ने मृत्युदंड को बंद करवा दिया था, कृषि की उन्नति के लिए प्रोत्साहन दिया गया, अनेक स्कूलों व मदरसो की स्थापना करवाया तथा अनेक पुल एवं सडकों का निर्माण करवाया था।" इस मत को बहुत से इतिहासकारों ने अस्वीकार कर

दिया। औरंगजेब ने अपने शासनकाल में केवल मुसलमान को शिक्षा देने के लिए मदरसो की स्थापना एवं अध्यापकों को आर्थिक सहायता दी ।उसके समय में मदरसा– ए– रहीम नामक एक उच्च कोटि की शिक्षा संस्था की स्थापना हुई ।7 औरंगजेब को मृत्यु के बाद ही शिक्षा के विकास की प्रक्रिया निरंतर जारी रही ।जिसमें उसके उत्तराधिकारियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

मुगल शिक्षा पद्धतिः

मुगल काल में भी सल्तनत काल की तरह शिक्षा का उद्देश्य मुख्य रूप से धार्मिक ही बना रहा। केवल अकबर के शासनकाल में शिक्षा को धम से दूर करने के कुछ प्रयास किए गए तथा उसमें उदारता का समावेश हुआ । अकबर ने मुस्लिम शिक्षा के साथ हिंदू धर्म शास्त्रों के अध्ययन को भी मिश्रित कर दिया ताकि दोनों धर्म के तुलनात्मक अध्ययन से दृष्टिकोण की संकीर्णता समाप्त हो जाए । उच्च शिक्षा के विकास के लिए अनेक कॉलेज की स्थापना की गई।

हिंदू शिक्षा :

मुगल काल में हिंदुओं के अनेक प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र थे । जिनमे बनारस व मिथिला प्रसिद्ध थे । बर्नर ने शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र बनारस के संबंध में लिखा है "बनारस एक विश्वविद्यालय की भांति था । परंतु आज के विश्वविद्यालय के समान उसमें ना तो कॉलेज और नए ही नियमित कक्षाएं लगती थी । बनारस विश्वविद्यालय प्राचीन स्कूलों की तरह था । जहां नगर के विभिन्न हिस्सों में गुरुजन अपने–अपने घरों पर विद्या प्रदान करते थे ।

परीक्षा पद्धति :

मुगल काल में आज के समान परीक्षा पद्धति नहीं थी । उस समय आज की तरह परीक्षाएं नहीं होती थी । अध्यापकों की आज्ञा से विद्यार्थियों को उच्च कक्षा में भेज दिया जाता था । डॉ युसूफ हुसैन ने स्पष्ट लिखा है "छात्रों को नीचे की कक्षा से उच्च कक्षा के लिए संबंधित शिक्षकों की सहमति पर प्रोन्नति प्रदान की जाती थी । शिक्षक विद्यार्थियों क संपूर्ण शैक्षिक कार्य को ध्यान में रखकर अपनी सहमति देते थे । छात्रों से घनिष्ठ संपर्क होने के कारण उन्हें अपनी सहमति देने में सरलता होती थी । उस समय वार्षिक परीक्षाओं की परंपरा नहीं थी । इसके साथ ही आलिम और फाजिल की उपाधियां भी प्रदान की जाती थो । धर्मशास्त्र में पारंगत व्यक्ति को 'आलिम' , तर्क और दर्शन के विद्यार्थियों को 'फाजिल' और साहित्य में प्रवीण व्यक्ति को 'कामिल' की उपाधि से विभूषित किया जाता था । हिंदू विद्यार्थियों को मंदिरों में स्नातक प्रमाण पत्र प्रदान करने की परंपरा प्रचलित थी।

महिला शिक्षा :

मुगल साम्राज्य में स्त्रियों की शिक्षा की कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं होती है और ना ही उनके अलग मकतब अथवा मदरसे में पढने का कोई वर्णन मिलता है । संभवतः संपन्न परिवार की लडकियां प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त करती थी । परंतु साधारण परिवार की लडकियां प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए मंदिर एवं मदरसे में ही जाती थी । मुगल शहजादियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जाती थी । वह कुरान का पाठ करने में , कलमा लिखने में और संगीत में निपुणता प्राप्त करती थी । 8 सल्तनत कालीन महिलाओं में रजिया एक योग्य एवं शिक्षित शासिका थी। उसकी निपुणता के कारण ही उसे सुल्तान का पद प्राप्त हुआ था। हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम एक विदुषी महिला और फारसी की कुशल लेखिका थी । अकबर की माता हमीदा बानू बेगम, माहम अनगा, सलीमा , सुल्ताना बेगम , नूरजहां, चांद सुलताना, मुमताज महल, तथा जेबूनीसा आदि अनेक सुशिक्षित महिलाओं का वर्णन प्राप्त होता है। जो इस बात का स्पष्ट प्रतीक है कि स्त्री शिक्षा की अलग से व्यवस्था न होने के बावजूद भी शिक्षा के प्रति लोग उदासीन नहीं थे । मध्यवर्गीय सामान्य महिलाएं भी शिक्षा ग्रहण करती थी। उन्हें हिंदी ,संस्कृत ,फारसी , क्षेत्रीय भाषाओं का ज्ञान होता था । जिसके कारण वह अपने धार्मिक ग्रंथो का अध्ययन करने में समर्थ रहती थी। मासरेंट ने लिखा है कि " अकबर ने शहजादियों की शिक्षा की ओर विशेष स्थान दिया....उन्हें लिखना पढना सिखाया जाता था और वृद्ध महिलाए उन्हें अन्य व्यवहारिक बातें सिखाती थी ।" 9

उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मध्य युग में विशेष कर मुगल काल में शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति हुई । जिसमें शासक वर्ग के साथ–साथ आम जनता, सामंत वर्ग और अमीर वग ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ।

मुस्लिम शिक्षा के प्रमुख केंद्र :
मुगल काल में शिक्षा प्रमुख केंद्र निम्नलिखित है–
दिल्ली–
मध्यकाल में दिल्ली की प्रसिद्धि का प्रमुख कारण केवल उसका राजधानी होना ही नहीं था बल्कि शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में भी उसकी ख्याति एक कारण थी। नसीरुद्दीन महमूद ने यहां नसीरिया मदरसे की स्थापना करवाई । तत्कालीन इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार अलाउद्दीन के शासनकाल में भी यहां 43 धर्माचार्य अध्यापन कार्य करवाते थे। फिरोजशाह तुगलक ने यहां 30 नए मदरसे की स्थापना करवाई थी तथा उनके पुराने मदरसे का जीर्णोद्धार करवाया था । [10] मुगल काल में हुमायूं और अकबर ने यहां अनेक मदरसे स्थापित किए। खैर– उल – मजलिस नामक मदरसे की स्थापना का श्रेय अकबर की धाय मां माहम अनगा को है ।शाहजहां ने भी यहां दारुल–बक नामक एक शाही मदरसे की स्थापना करवाई थी। अतः स्पष्ट है कि समस्त मुस्लिम शासन में दिल्ली एक शिक्षा का प्रमुख केंद्र बना रहा ।
आगराः
दिल्ली सल्तनत के अंतिम वंश 'लोदी वंश' के काल में आगरा को शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ । सिकंदर लोदी ने आगरा में अनेक मदरसे की स्थापना की । बाबर से अकबर के युग तक आते–आते आगरा शिक्षा की प्रगति की प्रकाष्ठा पर पहुंच गया था। अकबर का दरबार विभिन्न विद्वानों का आश्रय स्थल था। उसने फतेहपुर सीकरी व अन्य स्थानों पर अनेक मदरसे की स्थापना करवाई। उपरोक्त शिक्षा केंद्रों के अतिरिक्त जौनपुर ,बीदर ,कश्मीर ,गुजरात ,विजापुर, मालवा और मुल्तान , लाहौर भी मुस्लिम शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र थे।
निष्कषः
शिक्षा हमेशा से ही हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है । शिक्षा का महत्व मुगल काल में भी नजर आता है। मुगल काल के सम्राट विद्या अनुरागी थे ।उन्होंने अपनी प्रजा के लिए शिक्षा की पर्याप्त उचित व्यवस्था करना की तथा इसे अपना धार्मिक, नैतिक ,प्रशासनिक और राजनीतिक दायित्व समझा और इस दायित्व को पूर्ण करने का यथासंभव प्रयास किया ।
अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि मुगल में अन्य क्षेत्रों की तरह शिक्षा में भी कई उत्साह जनक सुधार दखने को मिलते है । इसलिए मुगल काल में शिक्षा और ज्ञान में व्यापक और क्रांतिकारी प्रगति हुई । इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि मुगल सम्राटों ने अपने सिद्धांतों के अनुसार अपनी मौजूदा शिक्षा प्रणाली को बदल दिया और जिसमे न केवल शिक्षा का प्रसार किया बल्कि इसकी वृद्धि के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास भी किया । अकबर ने विशेष रूप से अपने प्रयासों के माध्यम से मुस्लिम शिक्षा को धर्म के संबंधों से दूर करने और धार्मिक सद्भावना के माहौल में लाने की मांग की ।दुर्भाग्य से , हालांकि, उनके उत्तराधिकारियों विशेष रूप से औरंगजेब ने अपनी नीति से फिर भी से शिक्षा में क्रांतिकारी प्रयासों के मार्ग को अवरूद्ध कर दिया।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः
1. श्रीवास्तव ,डॉ ए एल ; मुगल कालीन भारत (1526 – 1707); पृष्ठ– 118–126
2. हुसैन,युसूफ; मध्यकालीन भारतीय संस्कृति की झलक; पृष्ठ– 78–84
3. लाइक,अहमद; मध्यकालीन भारतीय संस्कृति ; पृष्ठ– 146– 47
4. एडवर्ड, एस. एम. और जैरेड ,एच. एल. ओ. ; भारत में मुगल नियम; पृष्ठ– 225–56
5.रावत, पी. एल.; भारतीय शिक्षा का इतिहास ; पृष्ठ– 88–91
6. ला,एन. एन. ; मुस्लिम शासन के दौरान भारत में शिक्षा का प्रचार; पृष्ठ– 134–191
7. राशिद, ए.; सोसाइटी एंड कल्चर ऑफ मेडिकल इंडिया ; पृष्ठ– 158
8. जफर ,एस. एम.; एजुकेशन इन मुस्लिम इंडिया; पृष्ठ– 132
9. रावत ,पी. एल. यभारतीय शिक्षा का इतिहास; पृष्ठ– 93–100
10. मेहता ,एन. सी. ; रिलीजियस पालिसी ऑफ अकबर; पृष्ठ–167–78